अहिंसक जीवन शैली : मानव धर्म निष्ठा का अनुपम उपहार

मेधावी शुक्ला
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मानव धर्म निष्ठा का स्वरूप :

जीवन की व्यापकता के लिए स्वयं को संपूर्ण बना लेने की इच्छा शक्ति जब व्यक्ति के अंदर उत्पन्न हो जाती है तब वह श्रेष्ठता के प्रति समर्पित होने के लिए भगीरथ पुरुषार्थ करना आरंभ कर देता है। स्वयं की मूलभूत प्रवृत्तियों में सुधार करते हुए औपचारिक व्यवहार की आवश्यकता का आकलन कर अनौपचारिक संबंधों के प्रति विश्वसनीयता को बनाये रखना अहिंसक जीवन-शैली का प्रत्यक्ष प्रमाण होता है। सामान्य तौर पर अपनत्व एवं अन्य संबंधों के मध्य अनौपचारिक एवं औपचारिक व्यवहार का प्रचलन होता है, लेकिन दोनों ही संबंधों को निभाते हुए मिश्रित व्यवहार की कल्पना धीरे-धीरे साकार होने लगती है। मानवीय आचरण की विभिन्न स्थितियों में विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है निरंतर अपनों के साथ अनौपचारिक व्यवहार करते हुए अधिक मिठास की अनुभूति होती है, लेकिन यह भी प्रकट भाव उठता है कि कुछ स्थान पर तो अनौपचारिक ही होना चाहिए अर्थात् सभी स्थितियों में एक ही व्यवहार की स्वीकृति नहीं मिल पाती है और धीरे-धीरे मनमुटाव बढ़ता चला जाता है।

अब यदि जीवन के व्यवहार में अन्य लोगों अर्थात् स्वजनों एवं परिजनों के अतिरिक्त शेष मनुष्यों से व्यवहार की स्थितियाँ घटित होती हैं, तब अंत:करण में बचाव पक्ष के भाव उत्पन्न होते हैं जो समय प्रति समय यह अभिव्यक्ति करवाते हैं कि आप बुरा मत मानना मेरे कहने का तात्पर्य वह नहीं है जो आप समझ रहे हैं। किसी व्यक्ति द्वारा व्यवहार करने पर अर्थात् संबंधों के उतार-चढ़ाव की स्थितियों में बुरा मानना या बुरा लगना एक ऐसी सच्चाई है जो स्वयं के भाव एवं कुभाव को वैसे ही अनुभूति कराती है जैसे कहा गया सत्य था, क्योंकि सत्य को आवरण अथवा दूसरे तथ्यों एवं मतों से ढँकने पर सब कुछ कड़वी सच्चाई के रूप में बाहर आ जाता है, जिससे व्यक्ति के हृदय को गहरा आघात देता है, जो अंतत: मस्तिष्क में बदला लेने एवं क्षमा कर देने के विचार से संचित हो जाता है और अंतत: जीवन की प्रतिकूता एवं अनुकूलता के समय प्रकट होता है।

सद्भाव की जागृति का आधार :

सामाजिक जीवन के व्यवहार में अहिंसक जीवन-शैली को अपनाने का अर्थ है मंशा, संकल्प, संबंध एवं स्वप्न में सर्व को सुख पहुँचना अर्थात् आत्मा द्वारा ज्ञानइंद्रियों एवं कर्मइंद्रियों पर पूर्णतया नियंत्रण स्थापित कर लेना, ताकि व्यवहार शुभ एवं शुभाशीष भावों से भर उठे। स्वयं को 'मानव धर्म निष्ठा' के लिए अर्पित कर देना जीवन की वह उच्च अवस्था है, जिसके अंतर्गत व्यक्ति की भेद दृष्टि में बच्चा, स्त्री, पुरुष, जवान एवं बुज़ुर्ग को मिलने अथवा दिए जाने वाले दुःख हिंसा की शारीरिक और मानसिक यातनायों की स्थितियाँ कभी भी निर्मित नहीं होती हैं। जीवन के विराट भावों में सब मानव हैं तथा सभी के भीतर भावनाएँ एवं विचार हैं। अतः मानव धर्म निष्ठा के प्रति सदा न्याय संगत व्यवहार का प्रस्तुतिकरण करना चाहिए, जिससे स्वयं के संपर्क एवं संबंध में आनेवाले व्यक्तियों को सुख-दुःख की

अनुभूति हो सके। अहिंसा परमो धर्म: अर्थात् अहिंसा सबसे श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि 'अहिंसा' मानवीय व्यवहार की उच्च परिणिति है जो प्राणी जगत के अंदर सदभाव की जागृति का प्रमुख आधार होती है। मनुष्यता के प्रति श्रेष्ठ व्यवहार का प्रस्तुतिकरण धर्म को आचरण से जोड़ने की सुखद स्थिति है, जिसमें धारणा पक्ष की व्यावहारिकता यह बताती है कि धर्म से श्रेष्ठता का जीवंत संबंध होता है जो उसे पवित्र सिद्धांत की ओर अभिमुखित कर देता है।

जीवन में प्रज्ञावान होना सही विवेकशीलता का परिचायक है उसके बावज़ूद भी सामाजिक उन्नयन का परिणाम उस स्थान पर बौना हो जाता है, जहाँ मानव के साथ व्यावहारिक संबंधों की स्थितियाँ बंधनों की जकड़न को हिंसात्मक परिदृश्य के समतुल्य घटित हो जाती है। यदि व्यवहारगत हिंसा का स्वरुप विकृति से जुड़ जाए और उस मनुष्य के विभिन्न रूप में रोकने का प्रयास करते हुए कहना पड़े कि पीड़ित पक्षकार बच्चा, स्त्री, पुरुष, जवान एवं बुज़ुर्ग हैं, इसलिए दुःख मत दो, इस संबोधन के अतिरिक्त वह आघात सहने वाला मनुष्य है। इसलिए दुःख देना अनुचित है इसका प्रयोग करने का अर्थ है कि इंसानियत को पुनर्जीवित करने का प्रयास करना प्रासंगिक है। मानवीय संबंधों के मध्य कितना कठिन हो जाता है कि अहिंसक जीवन-शैली को अपनाया जाए, क्योंकि यह मानव धर्म निष्ठा का अनुपम उपहार है और मनुष्य की मनुष्यता को बचाने में मददगार भाव है जो व्यवहार की दुहाई से पुन: संरक्षित किया जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन की प्रक्रिया में प्रयास एवं पश्चाताप से उपजे संताप के साथ अहिंसक जीवन शैली के लिए कार्य करना कठिन होता है, जबकि मानव धर्म के प्रति निष्ठा जागृत करके अपने मनुष्य धर्म के निर्वहन को स्वीकृति प्रदान की जा सकती है। मानव का मानव बने रहना मानव की विजय का प्रतीक है, जबकि मानव का महामानव बन जाना जीवन की उपलब्धि है तथा मानव धर्म निष्ठा का प्रतिपालन अहिंसक जीवन-शैली का अनुपम उदाहरण है।

मानव व्यवहार की गरिमा :

धार्मिक जगत के कई प्रमाण अब सोलह कला संपूर्ण तथा संपूर्ण निर्विकारी भावों के साथ मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में होना स्वाभाविक होता है, जिसमें चेतना के सुप्त, जागृत, गतिशील एवं श्रेष्ठ चिंतन के जीवंत प्रमाण दृष्टिगोचर होते हैं। अहिंसक जीवन शैली के लिए पुरुषार्थ की ऊंचाई जब "संपूर्ण अवस्था से समर्पित अवस्था की ओर..." दिखाई देने लगती है तब जीवन में सिद्धांत के निर्माण से स्वयं को परिणाम तक उपलब्धि के साथ पहुँचाने का प्रयास किया जाना चाहिए। जब मानव द्वारा स्वयं को संपूर्ण बनाने की प्रक्रिया से आबद्ध किया जाता है, तब स्वयं की योग्यताओं को संपूर्ण सामर्थ्य लगाकर प्राप्त करने की इच्छा शक्ति से अभिप्रेरणा की अनुभूति होना सहज हो जाता है जो व्यक्ति को संपूर्ण बनाने में सहयोगी बन जाती है। मानव धर्म निष्ठा का वृहद स्वरुप व्यक्ति में उद्यमशीलता के गुणों से सुसज्जित मन को सृजन से साहसी बनाकर प्रबंधकीय क्रिया विधि हेतु प्रेरणा प्रदान करता है, जिससे वह मानवीय व्यवहार की गरिमा को बनाए रखने में सफल हो सके। इस प्रकार अहिंसक जीवन-शैली का व्यावहारिक पक्ष जीवन में संपूर्णता की उपलब्धि से संपन्नता की प्राप्ति के लिए कार्यरत रहता है, जिसमें आत्मिक सुख, शांति एवं आनदं समाहित रहते हैं, क्योंकि मानव धर्म को बनाए रखने में समर्पणता की गहन अवस्था से आत्मिक उत्कर्ष की स्थिति तक पहुँचा जा सकता है, जो मानवता को स्थापित करने में स्वयं की खोज परमात्मा की प्राप्ति तथा जीवन मुक्ति तक प्रयास करने में स्वयं को समर्पित करते हैं।

लेखक परिचय

मेधावी शुक्ला
(शोधअध्येता)
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा
b.k.medhavi@gmail.com